Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

'सहृदयानन्दम्' महाकाव्य के प्रणेता महाकवि श्री कृष्णानन्द का संस्कृत साहित्य में योगदान

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

'सहृदयानन्दम्' महाकाव्य के प्रणेता महाकवि श्री कृष्णानन्द का संस्कृत साहित्य में योगदान

Dr. Praveen

Lecturer D.A.V. College, Sadora, Yamuna Nagar (Haryana)

सहृदयानन्द महाकाव्य की रचना महाकवि श्री कृष्णानन्द ने तेहरवीं शताब्दी में की थी । इसे विस्मृति के गर्भ से निकालकर वि॰ सं॰ 2025 में चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ने प्रकाशित कर संस्कृत साहित्य को एक अनुपम ग्रन्थ भेंट किया । कवि का प्रतिपाद्य विषय पुण्यश्लोक नल–दमयन्ती का चरित्र है । महाकवि ने वाल्मीकि व्यास, कालिदास व भारवि आदि महाकवियों की शैली का अनुसरण करते हुए पौराणिक नलोपाख्यान पर आधृत महाकाव्य की कथावस्तु का गठन किया है ।

कवि की वंश परम्पराः

कवि और काव्य में कर्त्ता और कर्म सम्बन्ध है । एक जनक है, दूसरा जन्य है । शब्द कोष के अनुसार कवि शब्द का अर्थ है – सर्वज्ञ, प्रतिभाशाली, चतुर, बुद्धिमान्, विचारवान्, विचारशील, प्रशंसनीय ।[1] वैदिक साहित्य में कवि ईश्वर का पर्याय है ।[2] कवि की दुर्लभ शक्ति की प्रशंसा करते हुए कहा गया है –

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।

कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र च दुर्लभा ।।[3]

संस्कृत कवियों की प्रमुख विशेषता है कि वे स्वान्तः सुखाय काव्य की रचना करते थे । अतः कवियों ने अपनी रचनाओं में अपना परिचय नहीं दिया है। सहृदयानन्द महाकाव्य के रचयिता महाकवि श्री कृष्णानन्द भी इस प्रवृत्ति से अछूते नहीं रहे । इनका जन्म कपि×जल कुल में हुआ जैसा कि महाकाव्य के अन्तिम श्लोक से विदित होता है । यथा –

लक्ष्मीर्यावदलंकरोति हृदयं विष्णोर्नृसिंहाकृते –

र्यावद्विष्णुपदी च धूर्जटिजटाजूटान्तरे क्रीडती ।

कृष्णानन्दकवेः कपि×जलकुलक्षीरोदशीतद्युते –

स्तावत्काव्यमिदं तनोतु कृतिनामन्तः प्रमोदोदयम् ।।[4]

संस्कृत साहित्य–इतिहासकार एम॰ कृष्णमाचार्य के अनुसार महाकाव्य के रचयिता कृष्णानन्द पुरी (उड़ीसा) के कपि×जल परिवार के कायस्थ थे व इनकी उपाधि महापात्र थी अथवा किसी स्थानीय राजा के मन्त्री थे ।[5]

कवि का वैदुष्यः

कवि की रचना के अध्ययन से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि वे व्यापक एवं बहुमुखी काव्य–प्रतिभा वाले कवि थे, कवित्व के मुख्य दो पक्ष या अंग होते हैं, जिनसे कवित्व का स्वरूप संघटित होता है। इनमें से किसी एक पक्ष के निर्बल होने पर स्वस्थ कवित्व के दर्शन नहीं हो सकते, परन्तु प्रस्तुत महाकाव्य में इन दोनों का ही पूर्णतया सफल निर्वाह हुआ है । महाकवि अपने उद्देश्य की पूर्ति में पूर्णतः सफल रहा है । नैषध की ग्रन्थियों को सुलझा पाना सब के वश की बात नहीं थी । अतः महाकवि श्री कृष्णानन्द ने काव्य में आलंकारिता के स्थान पर सहज स्वभाविकता को अपनाया । जहाँ नैषध के 22 सर्गों में नल के विवाह–पर्यन्त ही कथा वर्णित है, वहां सहृदयानन्द के पन्द्रह सर्गों में ही सम्पूर्ण कथा निबद्ध है । अतः महाकवि श्री कृष्णानन्द ने अन्य नवीन प्रसर्गों की उद्भावना कर उसमें अपनी कवित्व प्रतिभा का प्रदर्शन किया है । इनकी रचना का मुख्य व्यंग्य श्रृंगार है ।

कवि की कृतियाँः

इनकी एकमात्र कृति सहृदयानन्द महाकाव्य है । महाकवि ने इसे अधिक रोचक, सजीव एवं विश्वसनीय बनाने के लिए यत्र–तत्र अनेक परिवर्तन किए हैं । अतः सम्पूर्ण महाकाव्य उत्कृष्ट बन पड़ा है । सम्पूर्ण नल–कथा को 944 पद्यों के माध्यम से पन्द्रह सर्गों में सभी घटनाओं को प्रस्तुत करके कवि ने प्रगाढ़ पाण्डित्य प्रकट किया है । संस्कृत साहित्य के आलंकारिकों द्वारा निर्दिष्ट महाकाव्य के नायक धीरोदात्तादि गुणयुक्त सद्वंशोत्पन्न क्षत्रिय राजा नल है । नल एवं दमयन्ती की प्रख्यात कथा इस कृति में वर्णित है । इसका इतिवृत्त इतिहासोद्भव है व श्रृंगार रस की प्रधानता है । इसके प्रत्येक सर्ग का अलग–अलग नामकरण किया गया है। ऐसा कहा जाता है कि इन्होंने नैषधीयचरित की टीका भी की थी, किन्तु आज वह प्राप्य नहीं है । अतः कहा जा सकता है कि महाकवि की एकमात्र रचना सहृदयानन्द महाकाव्य ही है ।

महाकाव्य का सामान्य परिचयः

मनुष्य अनन्तकाल से ही सुन्दरता का पुजारी रहा है । उसे सुन्दर वस्तु को देखने तथा मधुर ध्वनि को श्रवण करने से

---

1. संस्कृत हिन्दी कोश, पृ॰ 259
2. कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः । ईश॰, 1.8
3. अग्निपुराण, 337.3–4
4. सहृदयानन्द महाकाव्य, 15.61
5. हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल संस्कृत लिटरेचर, पृ॰ 184

विशेष आनन्ददायक अनुभूति होती है । इन्हीं अनुभूतियों को कवि भाषा के माध्यम से काव्य के रूप में प्रस्फुटित करता है । सहृदयानन्द महाकाव्य की कथावस्तु महाभारत के प्रसिद्ध आख्यान नलकथा पर आधारित है । कथा का नायक राजा नल है, जो क्षत्रिय है । उनके पिता का नाम वीरसेन है । राजा नल निषध देश का राजा है । दमयन्ती नल की पत्नी है व विदर्भराज भीम की पुत्री है । नल–दमयन्ती के परिणय को महाभारत के नलोपाख्यान के रूप में प्रस्तुत किया गया है । यही कथावस्तु सहृदयानन्द महाकाव्य का आधार है ।

निष्कर्ष :

अतः सार रूप में कह सकते हैं कि सहृदयानन्द महाकाव्य में पद–पद पर भाषा में प्रवाह तथा कवि के पाण्डित्य के दर्शन होते हैं। काव्य में कृत्रिमता दृष्टिगोचर नहीं होती । कवि ने अपनी काव्यशैली माधुर्य गुण से मण्डित करने की पूर्णचेष्टा की है । वर्णन छोटे–छोटे होते हुए भी मार्मिक हैं । काव्य का विषय स्वयं काव्य है, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान नहीं । सहृदयानन्द महाकाव्य में वैदर्भी रीति का प्रयोग है । इस दृष्टि से श्री कृष्णानन्द द्वारा विरचित उनकी एकमात्र कृति सहृदयानन्द महाकाव्य न केवल विद्वद्वर्ग के लिए अपितु सर्वसाधारण संस्कृतज्ञों के लिए सुग्राह्य एवं आनन्ददायक है । इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि महाकवि श्री कृष्णानन्द जी ने अपनी इस कृति को संस्कृत साहित्य में एक अमूल्य धरोहर के रूप में रख दिया है जो भविष्य में संस्कृतज्ञों के ज्ञान में श्रीवृद्धि करता रहेगा तथा कवि के पाण्डित्य को दर्शाता रहेगा ।